Maktabatul Madina India

Nek Aamal Par Isteqamat
Paane Ke Tariqe (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 450
Weekly Booklet : 450

(अमीरे अहले सुन्नत का बयान)

नेक आमाल पर इस्तिक़ामत पाने के त़रीक़े

सफ़ह़ात : 17

20 साल से एक चीज़ की त़लब 06
30 साल से दो चीज़ों का इ़लाज 10
बे मिसाल आ़जिज़ी की मिसाल 12
दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡم ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط

नेक आमाल पर इस्तिक़ामत पाने के त़रीक़े(1)

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "नेक आमाल पर इस्तिक़ामत पाने के त़रीक़े" पढ़ या सुन ले उसे नेकियों पर इस्तिक़ामत दे और उसे मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।" (جامع صغیر، ص280، حدیث:4580)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बिल्ली की इस्तिक़ामत

ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम शबई़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ज़ियाद के ग़ुलाम अ़जलान ने मुझे बताया कि ज़ियाद जब घर से निकलता तो मैं उस के आगे आगे मस्जिद तक जाता और मस्जिद में दाख़िल होने के बाद उस के बैठने तक आगे आगे ही चलता, एक दिन उस ने एक बिल्ली को देखा जो घर के एक कोने में बैठी थी, मैं उसे भगाने के लिये जाने लगा तो ज़ियाद ने कहा : इसे छोड़ दो, देखते हैं येह क्या करती है, फिर उस ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी और वापस आ गया, हम अ़स्र पढ़ कर जब वापस आए तब भी वोह बिल्ली वहीं थी, सूरज ग़ुरूब होने से कुछ देर पहले

1... 24 रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी, 21 दिसम्बर 2019 को होने वाले अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के बयान का तह़रीरी गुल्दस्ता।

एक चूहा निकला तो बिल्ली ने झपट्टा मारा और उसे दबोच लिया। ज़ियाद ने कहा : "जिसे कोई ज़रूरत हो तो वोह इस बिल्ली की त़रह़ मुस्तक़िल मिज़ाजी (यानी इस्तिक़ामत) से उस में लगा रहे उसे कामयाबी मिल जाएगी।"

(حلیۃ الاولیاء، 4/351، قول نمبر:5826)

मुराक़बा कहां से सीखा ?

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया के बारहवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़ुसैन नूरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के पास आए तो उन्हें निहायत दिल जमई और ख़ामोशी से एक कोने में बे ह़िस्स व ह़रकत (यानी बग़ैर हिल्ते जुल्ते) बैठा पाया (यानी मुराक़बे में देखा)। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने पूछा : "आप ने ऐसी दिल जमई और मुराक़बा (यानी ऐसी इस्तिक़ामत और बग़ैर हिले जुले इस त़रह़ बैठे रहना) कहां से सीखा ?" फ़रमाया : "हमारी एक बिल्ली थी उस से सीखा है, जब वोह शिकार का इरादा करती तो (चूहे के) बिल के पास घात लगा (यानी छुप) कर इस त़रह़ बैठती कि उस का एक बाल भी ह़रकत न करता।" (احیاء العلوم، 5/131)

पता चला जब कोई शख़्स किसी मक़्सद को पाना चाहे तो उसे चाहिये कि इस्तिक़ामत के साथ इन्तिज़ार करे, उकताए नहीं اِنْ شَآءَاللہ वोह अपने मक़्सद को पा लेगा। (मुह़ावरा है :) مَنْ جَدَّ وَجَدَ यानी जिस ने कोशिश की उस ने पा लिया।

अल्लाह पाक के नज़दीक ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस्तिक़ामत बहुत बड़ी नेमत है, ब ज़ाहिर छोटा नज़र आने वाला मगर मुस्तक़िल (यानी हमेशा) किया जाने वाला नेक अ़मल अल्लाह पाक को ज़ियादा पसन्द है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई :

अल्लाह पाक के नज़दीक ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल कौन सा है ? फ़रमाया : "वोह अ़मल जो हमेशा हो अगर्चे थोड़ा हो।" (بخاری،4/237،حدیث:6465)

बद क़िस्मती से आज कल हम में इस्तिक़ामत की बहुत कमी पाई जाती है, हम किसी भी काम को हमेशा जारी नहीं रख पाते, जोश में आ कर बहुत कुछ शुरूअ़ कर लेते हैं मगर फिर आहिस्ता आहिस्ता पीछे हट जाते हैं।

इस्तिक़ामत किसे कहते हैं ?

गुनाहों से बचते हुए नेक आमाल की पाबन्दी करना इस्तिक़ामत कहलाता है। (التعریفات للجرجانی،ص20) ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : इस्तिक़ामत येह है कि बन्दा रंजो ग़म, मुसीबत व राह़त में अल्लाह पाक की बन्दगी से मुंह न मोड़े। इस्तिक़ामत ही विलायत की जड़ है जिस से ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की हमराही नसीब होती है।

(تفسیر نور العرفان،پ12،ھود،تحت الآیۃ:112،ص372)

येह ह़क़ीक़त है कि किसी काम को इस्तिक़ामत के साथ करना नफ़्स पर बहुत मुश्किल होता है। कोई भी नेक अ़मल शुरूअ़ करते वक़्त तो बड़ा जोश होता है जैसा कि नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त बहुत जोश से पढ़ते हैं, फिर आहिस्ता आहिस्ता छूट जाती हैं, यूंही किसी को नेक आमाल के रिसाले के ज़रीए़ अपना जाइज़ा लेने पर इस्तिक़ामत नहीं मिलती, किसी को हर महीने तीन दिन के क़ाफ़िले में सफ़र करने पर इस्तिक़ामत नहीं मिलती, किसी को हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की इस्तिक़ामत नहीं मिलती, कोई कहता है : दावते इस्लामी के 12 दीनी कामों में इस्तिक़ामत नहीं मिलती, अल ग़रज़ ! हर एक को इस्तिक़ामत की कमी की शिकायत है। अ़रबी मक़ूला है : مَنْ طَلَبَ شَیْئًا وَجَدَّ وَجَدَ وَمَنْ قَرَعَ الْبَابَ وَلَجَّ وَلَجَ यानी जो किसी चीज़ की त़लब में मेह़नत व कोशिश करता है वोह उसे एक दिन

ज़रूर पा लेता है और जो किसी दरवाज़े को खटखटाए और मुसल्सल खटखटाता ही चला जाए तो वोह एक दिन उस में ज़रूर दाख़िल हो जाएगा। (تعلیم المتعلم طریق التعلم، ص34) यानी वोह दरवाज़ा उस के लिये खुल जाएगा और वोह उस में दाख़िल होने में कामयाबी ह़ासिल कर लेगा।

इस्तिक़ामत की अहमिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गों के अक़्वाल

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : इस्तिक़ामत आधी कामयाबी है जैसा कि ग़म आधा बुढ़ापा है। (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 173) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली जूज़जानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इस्तिक़ामत इख़्तियार करो, करामत के त़लबगार न बनो क्यूंकि तुम्हारा नफ़्स करामत की त़लब में रहता है ह़ालांकि तुम्हारा रब तुम से इस्तिक़ामत का मुत़ालबा फ़रमाता है।" (रिसाला क़ुशैरिया, स. 240) सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं : एक इस्तिक़ामत हज़ार करामात से बेहतर है। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, पा 12, हूद, त़ह़तल आयह : 112, स. 372) एक और मश्हूर मक़ूला है : اَلْاِسْتِقَامَۃُ فَوْقَ الْکَرَامَۃِ यानी इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जिस नेक काम पर आप को इस्तिक़ामत नहीं मिल पा रही उस के बारे में संजीदगी से ग़ौरो फ़िक्र करते (यानी उस को Serious लेते) हुए अपना ज़ेहन बनाइये कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ अब मैं इस नेक काम में नाग़ा नहीं होने दूंगा, चाहे दिल लगे या न लगे, फिर भरपूर कोशिश कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ आहिस्ता आहिस्ता आप इस में कामयाब हो जाएंगे और आप को इस्तिक़ामत मिल जाएगी। देखिये ! अगर पानी का क़त़रा किसी पत्थर पर मुसल्सल गिरता रहे तो वोह पत्थर में उस जगह पर सूराख़ कर देता है। लिहाज़ा मुसल्सल कोई काम हो तो उस का अपना एक असर होता है, अगर आप ने नोट किया हो (मैं ने नोट किया है) कि गर्म और ठन्डे पानी का एक मिक्सचर नल होता है, उस के दो हैन्डल होते हैं, आ़म त़ौर पर

एक हैन्डल ज़ियादा इस्तिमाल होता है, जो हैन्डल इस्तिमाल होता रहता है और जिस पर हाथ लगते रहते हैं वोह थोड़ा चमकदार और साफ़ सुथरा रहता है जब कि जिस हैन्डल को बिल्कुल टच नहीं किया, उस पर ज़ंग वग़ैरा आ जाता है, तो जिस को मुसल्सल हाथ लगते रहे उस की सफ़ाई होती रही और जिस को हाथ नहीं लगे वोह ज़ंग आलूद हो गया, इसी त़रह़ कई चीज़ें और मशीनें ऐसी होती हैं कि अगर उन को मुसल्सल इस्तिमाल न करें तो वोह जाम हो जाती हैं और बाज़ औक़ात काम करना भी छोड़ देती हैं, उन को रवां करने के लिये फिर जिद्दो जहद करनी पड़ती है, लिहाज़ा अगर हम इस्तिक़ामत के साथ काम करें चाहे वोह थोड़ा हो, तो एक दिन ऐसा आएगा कि वोह हमारी रगो पै (यानी दिलो दिमाग़) में सरायत कर जाएगा, फिर उस काम के बग़ैर हमें चैन नहीं आएगा, जिस त़रह़ जो पक्के नमाज़ी होते हैं उन को नमाज़ पढ़े बग़ैर चैन नहीं आता, मिसाल के त़ौर पर रात को जाग रहे हैं और फ़ज्र की अज़ान में थोड़ी देर रह गई है तो जो पक्का नमाज़ी होगा वोह सोएगा नहीं, अगर बिल फ़र्ज़ वोह लेटेगा तो उस को नींद नहीं आएगी, उस को टेन्शन लगी होगी कि कहीं मेरी नमाज़ न रह जाए, इसी त़रह़ जो जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने का पाबन्द होगा, कैसी ही मसरूफ़ियत क्यूं न हो, जब वोह अज़ान सुन लेगा और जमाअ़त खड़ी होने वाली होगी तो वोह हर काम छोड़ देगा और येह सब उस की फ़ित़रत में शामिल हो जाएगा। इस के बरअ़क्स जो नमाज़ तो पढ़ता है मगर जमाअ़त से नहीं पढ़ता बल्कि उसे जमाअ़त मिल गई तो ठीक और न मिली तो कोई अफ़सोस नहीं होता, इसी त़रह़ जो अधूरे नमाज़ी होते हैं उन को भी परवा नहीं होती कि जमाअ़त जाती है तो जाए यहां तक कि अगर उन की नमाज़ क़ज़ा भी हो जाए तब भी उन्हें इस का कोई सदमा नहीं होता लेकिन जो पक्का नमाज़ी होगा वोह नमाज़ क़ज़ा नहीं करेगा, जमाअ़त नहीं छोड़ेगा, इसी त़रह़ जो पहली सफ़ का आ़दी होगा वोह पहली सफ़

पाने के लिये कोशिश करेगा तो उस से पहली सफ़ नहीं छूटेगी, मैं (यानी अमीरे अहले सुन्नत) ने रमज़ानुल मुबारक के एतिकाफ़ में नोट किया है कि बाज़ लोगों को येह जज़्बा होता है कि वोह सहरी में पहली सफ़ में बैठ कर अपने बैग से कुछ न कुछ निकाल कर खा रहे होते हैं ताकि पहली सफ़ न छूट जाए जब कि बाज़ मोतकिफ़ीन को पहली सफ़ पाने की कोई परवा नहीं होती, उन में से कई ऐसे होते हैं कि उन की जमाअ़त की कई रकअ़तें निकल जाती हैं बल्कि कभी ऐसा भी होता होगा कि उन की पूरी जमाअ़त ही निकल जाती होगी। येह सब अपने जज़्बे और इस्तिक़ामत की बात है। बहरेह़ाल कोई भी काम मुसल्सल करने से ही इस्तिक़ामत मिल सकती है।

20 साल से एक चीज़ की त़लब

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ नेक कामों की आ़दत बनाने और उन पर इस्तिक़ामत पाने के लिये कई सालों तक कोशिश फ़रमाते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुवर्रिक़ इ़जली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : 20 साल हो चुके हैं, मैं अल्लाह पाक से एक चीज़ के बारे में सुवाल कर रहा हूं मगर मुझे मेरा मक़्सद मिल नहीं रहा, और मैं मायूस भी नहीं हुवा, किसी ने अ़र्ज़ की : आख़िर ऐसी क्या ज़रूरत है कि आप 20 साल से दुआ़ मांग रहे हैं तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "(मेरी ज़रूरत येह थी कि) मैं फ़ुज़ूल बातें करना छोड़ दूं।"

(الزہد للامام احمد بن حنبل، ص310، قول نمبر:1762 بتغیرٍ قلیلٍ)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! ह़ज़रते मुवर्रिक़ इ़जली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से हमें कितनी कमाल की बात ह़ासिल हुई कि आप 20 साल तक एक दुआ़ मांगते रहे, अफ़सोस ! हम येह सोच कर दुआ़ ही नहीं मांगते कि हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होती और बाज़ लोग तो यूं बक बक शुरूअ़ कर देते हैं कि نَعُوْذُ بِاللّٰہ ! अल्लाह पाक हमारी नहीं सुनता, याद रखिये ! अल्लाह पाक से मांगते चले जाएं, अगर नहीं मिल रहा, ताख़ीर हो रही है

तो यक़ीनन उस में हमारी बेहतरी है क्यूंकि हम नहीं जानते कि हमारी बेहतरी किस में है जैसा कि मां ग़ुस्से में आ कर बेटे को बद्दुआ देती है कि तू फट पड़े, ग़ारत हो जाए। तो अल्लाह पाक उस को क़बूल नहीं करता यानी उस का असर ज़ाहिर नहीं करता, अगर अल्लाह पाक इस दुआ का असर ज़ाहिर कर दे यानी मां बद्दुआ दे कि तू फट पड़े और बेटा फट जाए तो फिर रोएगा कौन ? बेटा या मां ? बेटा तो फट कर ख़ामोश हो गया, अब मां उ़म्र भर रोएगी, इसी लिये येह भी अल्लाह पाक की नेमत और रह़मत है कि उस ने मां की दी हुई बद्दुआ क़बूल नहीं फ़रमाई वरना अगर वोह क़बूल कर लेता तो मां ही तक्लीफ़ में आ जाती और अल्लाह पाक ने उसे तक्लीफ़ से बचा लिया। इसी त़रह़ हम और बहुत सारी दुआएं मांगते हैं लेकिन वोह हमारे ह़क़ में बेहतर न होने की वज्ह से बारहा क़बूल नहीं की जातीं (यानी उन का असर ज़ाहिर नहीं किया जाता) वरना हर दुआ 100 फ़ीसद क़बूल ही क़बूल है। याद रहे ! क़बूलिय्यत की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, एक सूरत येह है कि उस दुआ का असर ज़ाहिर हो जाता है जैसे हम कहते हैं कि दुआ की तो फ़ुलां काम हो गया तो येह क़बूलिय्यत ही कहलाती है। यूंही क़बूलिय्यत की दूसरी सूरत येह है कि उस दुआ की वज्ह से कोई मुश्किल ह़ल हो जाती और आने वाली मुसीबत टल जाती है जिस का हमें पता नहीं चलता। क़बूलिय्यत की तीसरी सूरत येह है कि दुआ चूंकि एक इ़बादत है लिहाज़ा क़ियामत के दिन उस का अज्र मह़फ़ूज़ मिलेगा। वोह दुआएं जो दुनिया में क़बूल नहीं हुई थीं यानी उन का ज़ाहिरी असर बन्दे ने नहीं देखा था, क़ियामत के दिन जब बन्दा उन का अज्रो सवाब देखेगा तो तमन्ना करेगा कि काश दुनिया में मेरी कोई भी दुआ क़बूल न हुई होती और आज क़ियामत के दिन मुझे इस का अज्रो सवाब मिल जाता। दुआ में इस्तिक़ामत अ़ज़ीम शै है, देखिये ! ह़ज़रते मुवर्रिक़ इ़जली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ 20 साल से दुआ मांग रहे थे और फ़रमाया कि जो चीज़ मांग रहा

हूं चाहे वोह न मिले लेकिन मैं ने भी येह दरवाज़ा कभी नहीं छोड़ना और न ही मैं मायूस हूं। हम ने भी अपने रब का दरवाज़ा नहीं छोड़ना और उस के दरवाज़े पर पड़े रहना है कि पड़े ही रहने से काम होगा, उस की बारगाह में झुके रहें और उस से अपनी मुरादें मांगते रहें कि वोह करीम है और उस की रह़मत बहुत बड़ी है।

ह़ज़रते मुवर्रिक़ इ़जली رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ ने दुआ़ भी कैसी प्यारी मांगी कि फ़ुज़ूल बोलने की आ़दत छूट जाए। बद क़िस्मती से फ़ुज़ूल बातें करने के लिये हम मौक़अ़ तलाश करते हैं, सोशल मीडिया पर ज़रा सा कोई मौक़अ़ या Issue (यानी मस्अला) मिले तो कमेन्टस देना शुरूअ़ हो जाते हैं, इसी त़रह़ अगर दोस्तों में कोई Issue मिले या कोई बात हो जाए तो उस पर लेक्चर देना और तब्सिरे करना शुरूअ़ हो जाते हैं, फिर चाहे वोह फ़ुज़ूल हों या مَعَاذَاللہ गुनाहों भरे, हम पीछे हटने के लिये तय्यार नहीं होते जब कि अल्लाह वालों की आ़जिज़ी देखिये कि अल्लाह पाक का दरवाज़ा नहीं छोड़ना और दुआ़ मांगते रहना है, पता चला कि अगर कोई फ़ुज़ूल बातों को छोड़ने के लिये जिद्दो जहद करेगा तो ही इस्तिक़ामत मिलेगी।

लगाएं मुस्तक़िल क़ुफ़्ले मदीना लब पे हम मौला
हमारी फ़ाल्तू बातों की आ़दत दूर हो जाए

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

20 साल तक मशक़्क़त के साथ इ़बादत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबतुल ग़ुलाम رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं 20 साल तक मशक़्क़त के साथ नमाज़ पढ़ता रहा और (इस के बाद) 20 साल से नमाज़ से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहा हूं। (حلیۃ الاولیاء، 10/9، قول نمبر:14305)

यानी मैं ने 20 साल तक अपने नफ़्स को मार कर इसे ज़बरदस्ती इ़बादत पर आमादा किया, वोह मानता नहीं था लेकिन मैं मशक़्क़त उठाता रहा, मेह़नत और

कोशिश करता रहा, इस के बाद 20 साल हो चुके हैं मेरा इबादत में ऐसा दिल लगा हुवा है कि इस नेमत से मज़ा ले रहा हूं और अल्लाह पाक की इबादत से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहा हूं। जब कि हमारी हालत तो येह है कि दिल नहीं लगा तो नमाज़ छोड़ दी, दिल नहीं लगा तो नेक आमाल करना छोड़ दिये, दिल नहीं लगा तो क़ाफ़िले से पीछे हट गए जो हमारे लिये सुन्नतें सीखने सिखाने का ज़रीआ है, दिल नहीं लगा तो सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में जाना छोड़ दिया जो हमारी आख़िरत बनाता है, दिल नहीं लगा तो अच्छी सोहबत से निकल कर बुरी सोहबत में जा पहुंचे। याद रखिये ! दिल लगे या न लगे अगर हम अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये नेक कामों में लगे रहें तो इन बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की तरह हमारा दिल भी लग ही जाएगा। اِن شاءَ اللّٰہُ الکریم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेक आमाल पर इस्तिक़ामत पाने के लिये इस्तिक़ामत के साथ अल्लाह पाक की इबादात करने वाले बुज़ुर्गों के वाक़िआत पढ़ना सुनना भी बड़ा फ़ायदेमन्द है, इस से इबादत करने और इस पर इस्तिक़ामत हासिल करने में मदद मिलती है चुनान्चे

बुलन्द मक़ाम का हुसूल

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते अब्दुल्लाह बिन औन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को इस्तिक़ामत की वजह से बुलन्द मक़ाम हासिल हुवा। (حلیۃ الاولیاء، 3/47، قول نمبر:3111)

40 साल तक नहीं हंसे

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से) 40 साल तक नहीं हंसे। (احیاء العلوم، 4/231) याद रखिये ! ज़ोर ज़ोर से हंसना और क़हक़हा लगाना सुन्नत नहीं।

40 साल तक क़ुरआने करीम पढ़ाया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने 40 साल तक मस्जिद में क़ुरआने करीम पढ़ाया। (अल्लाह वालों की बातें, 4/241)

अफ़सोस ! हमारा मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने का दिल करता है न ही पढ़ाने का, काश ! सद करोड़ काश ! जिस त़रह़ हमें दुनियावी चीज़ों और दुनियावी माल की त़लब में इस्तिक़ामत मिल जाती है इसी त़रह़ नेकियों की त़लब में भी इस्तिक़ामत मिल जाए।

20 साल तक दुनियावी गुफ़्तगू से परहेज़

ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़ैसम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने 20 साल तक दुनियावी गुफ़्तगू नहीं की। (احیاء العلوم، 3/137)

40 साल तक इ़शा के बाद गुफ़्तगू न की

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मोतमिर رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने 40 साल तक इ़शा के बाद गुफ़्तगू न फ़रमाई। (احیاء العلوم، 3/137)

30 साल से दो चीज़ों का इ़लाज

एक आ़लिमे दीन ने फ़रमाया : मैं 30 साल से दो चीज़ों का इ़लाज कर रहा हूं : ﴾1﴿ लोगों से लालच व त़मअ़ छोड़ना ﴾2﴿ ख़ालिस अल्लाह पाक के लिये अ़मल करना। (حلیۃ الاولیاء، 7/320، قول نمبر:10673)

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का मामूल

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिया रज़विया अ़त्तारिया के 11वें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का 30 साल तक येह मामूल रहा कि इ़शा की नमाज़ के बाद खड़े हो कर सुब्ह़ तक अल्लाह अल्लाह पढ़ते रहते और उसी वुज़ू से

सुब्ह़ की नमाज़ अदा करते। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की 20 साल तक तक्बीरे ऊला फ़ौत न हुई। (शर्ह़ शजरए क़ादिरिय्या, स. 73)

ऐ आशिक़ाने औलिया ! बा जमाअ़त नमाज़ में जो पहली तक्बीर (यानी तक्बीरे तह़रीमा) कही जाती है उसे "**तक्बीरे ऊला**" कहते हैं। ग़ौर कीजिये ! ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस्तिक़ामत के साथ 20 साल तक तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ी। हम से अगर कोई सुवाल करे कि क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें तक्बीरे ऊला के साथ पढ़ीं ? तो हो सकता है येही जवाब मिले कि आज पांचों नमाज़ों में मुझे एक भी तक्बीरे ऊला नहीं मिली, येह भी जवाब हो सकता है कि पांचों नमाज़ें तो क्या पांच दिन ऐसे भी गुज़रे हैं कि एक भी तक्बीरे ऊला नहीं मिली और येह जवाब भी मुम्किन है कि पांच महीने गुज़र गए लेकिन एक भी तक्बीरे ऊला नहीं मिल सकी।

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कोई आ़म शख़्सिय्यत नहीं बल्कि सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिया रज़विया के बहुत बड़े पेशवा और अल्लाह पाक के वली गुज़रे हैं, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हमारे पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मशाइख़ और पीरों में से हैं, हमारे शजरए क़ादिरिया में येह जो शेर पढ़ा जाता है : "जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे बा सफ़ा के वासित़े" इस से आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ही मुराद हैं। इन की इस्तिक़ामत देखिये कि 20 साल तक तक्बीरे ऊला नहीं छोड़ी, अफ़सोस ! हमें पांचों नमाज़ें तक्बीरे ऊला के साथ तो क्या बा जमाअ़त भी (पढ़ने को) नहीं मिलतीं, कभी फ़ुर्सत मिल गई या मूड हो गया तो मस्जिद पहुंच गए और पूरी जमाअ़त मिल गई वरना अधूरी ही मिलती है। बद क़िस्मती से एतिकाफ़ करने वालों में से भी बाज़ को पूरी जमाअ़त नहीं मिलती। अल्लाह पाक हमें नमाज़ी बना दे, वरना हमारा ह़ाल येह है कि "मन अपना पुराना पापी है, बर्सों में नमाज़ी बन न सका।" अल्लाह पाक

इन औलियाए किराम पर अपनी रह़मतें नाज़िल फ़रमाए और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही — मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त

हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही — मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें, वक़्त ही पर

(वसाइले बख़्शिश, स. 89)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बे मिसाल आ़जिज़ी की मिसाल (वाक़िआ़)

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के उस्ताज़े मोह़तरम के बारे में है कि एक शख़्स ने उन्हें तीन बार खाने की दावत दी, आप जब भी जाते तो वोह वापस लौटा देता, यहां तक कि चौथी मरतबा वोह आप को अपने घर ले आया और आप से बार बार लौटाए जाने के बावुजूद नाराज़ न होने की वज्ह पूछी, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने जो इरशाद फ़रमाया इस पर वोह लोग जो अपने आप को अपने मुंह से फ़क़ीर, सरापा तक़्सीर और बड़ा गुनाहगार बन्दा हूं वग़ैरा कहते हैं, ग़ौर करें कि उन का ऐसा कहना कहां तक दुरुस्त है ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अपने नाराज़ न होने की वज्ह येह बताई कि "मैं 20 साल तक अपने नफ़्स को ज़िल्लत पर राज़ी रहने का आ़दी बनाता रहा यहां तक कि अब इस की ह़ालत कुत्ते जैसी हो गई है कि जब इस को धुत्कारा जाए तो चला जाता है, जब इस को बुलाया जाए तो लौट आता है, अगर तुम मुझे 50 मरतबा भी लौटा देते और उस के बाद फिर बुलाते तो मैं चला आता।"

(احیاء العلوم، 5/81 ملخصًا)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इसे कहते हैं अस्ल इस्तिक़ामत और आ़जिज़ी ! हम अपने आप को ज़बानी कलामी बड़े आ़जिज़, मिस्कीन, गुनाहगार और फ़क़ीर ह़क़ीर सरापा तक़्सीर कहते हैं, याद रहे ! अगर कोई ख़ुद को ऐसा कहता हो तो हम

उस पर बद गुमानी नहीं करेंगे लेकिन जो भी कहे वोह ख़ुद ग़ौर कर ले कि क्या दिल की कैफ़िय्यत वाक़ेई फ़क़ीराना, ह़क़ीराना और मिस्कीनों वाली है ? या मिज़ाज के ख़िलाफ़ ज़रा सी बात हुई और आ़जिज़ी के अगले पिछले सारे रिकॉर्ड दरिया में डुबो दिये, बिफर गए और शोर शराबा शुरूअ़ कर दिया ! ऐसा बन्दा हरगिज़ आ़जिज़ व फ़क़ीर नहीं हो सकता। अस्ल मिस्कीनी और आ़जिज़ी ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के उस्ताद की है जो लाइक़े तक़्लीद है, अल्लाह पाक हमें भी ह़क़ीक़ी आ़जिज़ी नसीब फ़रमाए। बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم ने लिखा है कि जो दूसरों के सामने ज़बानी कलामी आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ बोलता है वोह ह़क़ीक़त में रियाकारी करता है ताकि लोगों पर अपनी छाप डाल सके लेकिन याद रहे ! जो भी आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ कहता हो उस पर बद गुमानी नहीं करेंगे और न ही किसी मुअ़य्यन शख़्स पर कलाम करेंगे कि उस के दिल की कैफ़िय्यत हम नहीं जानते।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

इस्तिक़ामत में रुकावट चीज़ें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! राहे इस्तिक़ामत पर चलने में एक बहुत बड़ी रुकावट सुस्ती भी है क्यूंकि जब किसी शख़्स का कोई काम करने का दिल ही नहीं करेगा तो वोह उस पर इस्तिक़ामत कैसे ह़ासिल करेगा ? लिहाज़ा सुस्ती भगाइये और इस से पीछा छुड़ाइये कि येह बुहत बड़ी आफ़त व मुसीबत है क्यूंकि सुस्त इन्सान दीनो दुनिया का कोई बड़ा काम नहीं कर सकता जब कि इस्तिक़ामत के साथ थोड़ा थोड़ा काम करने वाला भी एक दिन अपनी मन्ज़िल पा लेता है। जैसा कि ख़रगोश और कछवे का मुक़ाबला हुवा कि कौन पहले फ़ुलां मक़ाम तक पहुंचता है तो ख़रगोश ने दिल में सोचा मैं बहुत तेज़ रफ़्तार हूं, तोड़ी ही देर में छलांगें लगाता हुवा वहां पहुंच जाऊंगा, लिहाज़ा उस ने सुस्ती का मुज़ाहरा करते हुए इरादा

किया कि चन्द मिनट आराम कर लेता हूं, जब कि कछवा अपनी सुस्त रफ़्तार के साथ मुसल्सल चलता रहा और ख़रगोश से पहले मत़लूबा मक़ाम तक पहुंच गया। ग़ौर कीजिये ! ख़रगोश फुरतीला होने के बावुजूद सुस्ती की वज्ह से मारा गया, पता चला कि चाहे काम थोड़ा हो और आहिस्ता भी हो लेकिन मुसल्सल हो तो उस में कामयाबी मिल सकती है।

सुस्ती के सबब इ़बादत तर्क करने वाला

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** अल्लाह पाक जिस शख़्स को इ़बादत का आ़दी बना दे और फिर वोह सुस्ती की वज्ह से उसे छोड़ दे तो अल्लाह पाक उस से नाराज़ हो जाता है। (اتحاف السادۃ المتقین، 3/763)

ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेश्वा इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपने क़ाबिल तरीन शागिर्द इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से फ़रमाया : तुम बहुत कुन्द ज़ेहन (यानी पढ़ने में कमज़ोर) थे मगर तुम्हारी कोशिश और मुदावमत (यानी इस्तिक़ामत) ने तुम्हें आगे बढ़ा दिया। (राहे इ़ल्म, स. 45)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه पढ़ाई में कमज़ोर होने के बावुजूद पढ़ते रहे, कभी पीछे नहीं हटे मगर अफ़सोस ! हमारे कई त़लबा पीछे हट जाते हैं, आ़म त़ौर पर हर मद्रसे में दर्से निज़ामी की पहली क्लास में बहुत सारे त़लबाए किराम दाख़िला लेते हैं लेकिन फिर दूसरी और तीसरी क्लास में पीछे हटना शुरूअ़ हो जाते हैं यहां तक कि दौरए ह़दीस शरीफ़ (आख़िरी क्लास) में गिनती के त़लबाए किराम पहुंचते हैं, जो त़लबाए किराम जामिअ़ातुल मदीना में दर्से निज़ामी या मदारिसुल मदीना में ह़िफ़्ज़ कर रहे हैं वोह याद रखें कि चाहे 50 साल लग जाएं लेकिन आप इस्तिक़ामत के साथ लगे रहें, اِنْ شَآءَاللّٰه आप को

पढ़ने का सवाब मिलता रहेगा और अपना येह ज़ेहन बना लें कि कुछ भी हो जाए, चाहे कुछ समझ में आए या न आए, गरदानें याद हों या न हों, सर्फ़ व नह़व मुश्किल लगे या न लगे आप ने लगे रहना है, हो सकता है कि इब्तिदा में मुश्किल लगे लेकिन आहिस्ता आहिस्ता इ़ल्मे दीन आसान हो जाएगा, इसी त़रह़ जब आप पढ़ने लगें तो यूं निय्यत कर लें कि मैं इ़ल्मे दीन पढ़ना चाहता हूं फिर उस के लिये दुआ़ करें, वज़ीफ़े पढ़ें और दूसरों से भी दुआ़ करवाएं اِنْ شَآءَاللّٰه आप पढ़ जाएंगे। देखिये ! इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه कुन्द ज़ेहन थे लेकिन मेह़नत करते रहे तो बहुत बड़े इमाम और मुज्तहिद बन गए, येह बहुत बड़ा मरतबा है, इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه के बहुत से शागिर्द हैं लेकिन आप के सब से बेहतरीन और आला दर्जे के दो शागिर्द हैं : इमाम मुह़म्मद और इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْهِما।

फ़ुज़ूल गोई की निकले आ़दत हो दूर बेजा हंसी की ख़स्लत
दुरूद पढ़ता रहूं मैं हर दम इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 583)

दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यूं दुआ़ मांगा करते थे : "اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْكَسَلِ وَاَرْذَلِ الْعُمُرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الدَّجَّالِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ" यानी (ऐ अल्लाह पाक !) मैं बुख़्ल, सुस्ती, बुढ़ापे की इन्तिहाई उ़म्र, क़ब्र के अ़ज़ाब, दज्जाल के फ़ित्ने, ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से तेरी पनाह चाहता हूं। (بخاری،3/257،حدیث:4707) इस ह़दीसे पाक में "اَرْذَلِ الْعُمُرِ" (यानी बुढ़ापे की इन्तिहाई उ़म्र) से निकम्मी उ़म्र के बूढ़े मुराद हैं जो घर के किसी कोने में पड़े होते हैं और किसी काम के नहीं होते, इस उ़म्र से प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह पाक की पनाह मांगी है। यूंही सुस्ती से भी प्यारे

आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पनाह मांगी है ह़ालांकि सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसा चुस्त न तो कोई हुवा, न होगा मगर फिर भी सुस्ती से मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की बारगाह में अ़र्ज़ कर रहे हैं। इसी त़रह़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुनाहों से मासूम हैं, इस के बावुजूद मुख़्तलिफ़ रिवायात में है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दिन में कभी 70 या 100 मरतबा इस्तिग़फ़ार पढ़ा करते थे जब कि हमें दिन रात गुनाह करने के बावुजूद एक बार भी इस्तिग़फ़ार पढ़ने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती।

शैख़ नज्मुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दो अश्आ़र का तर्जमा है : ﴿1﴾ फ़रमां बरदार रहो, मेह़नत करते रहो और सुस्ती से काम मत लो कि एक दिन तुम्हें अपने रब की त़रफ़ ज़रूर लौटना है। ﴿2﴾ रातों को सोना छोड़ दो, मख़्लूक़ में से बेहतर वोह है जो रातों को बहुत कम सोता है (ताकि ख़ूब इ़बादत कर सके।) (राहे इ़ल्म, स. 85)

याद रखिये ! यहां रात में जागने वाले वोह लोग मुराद नहीं जो रात को दो बजे घर आते हैं और उन्हें इतनी तौफ़ीक़ नहीं होती कि वोह गाड़ी से उतर कर डोर बेल बजाएं बल्कि गाड़ी खड़ी कर के गली के अन्दर हॉर्न बजाते रहते हैं, गोया वोह अपनी ह़माक़त का यूं एलान कर रहे होते हैं कि अगर कभी बेवुक़ूफ़ को न देखा हो तो मुझे देख लो, और न ही वोह नौजवान मुराद हैं जो आधी रात को बाइक का साइलेन्सर निकाल कर घूमते, गली में खेलते, शोर मचा रहे होते और चौपाल लगा कर गप्पें मार रहे होते हैं, उन के यूं रात में जागने पर उन्हें कोई सवाब नहीं मिलेगा। रात में तो कुत्ता भी जागता है और भोंक भोंक कर न ख़ुद सोता है न दूसरों को सोने देता है, यहां वोह लोग मुराद हैं जो अल्लाह पाक की इ़बादत के लिये जागते हैं

मसलन सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रात गुज़ारते हैं कि जहां कुछ सोने का वक़्फ़ा भी होता है और तहज्जुद की नमाज़ भी मिलती है, यूंही रात जाग कर मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत करते, इल्मे दीन ह़ासिल करते, आ़लिमे दीन की सोह़बत में बैठते, दीन पढ़ते, क़ुरआने करीम की तिलावत करते हैं तो उन का जागना यक़ीनन इ़बादत है और वोह जो दूसरों को परेशान करते हैं उन का फ़र्ज़ नमाज़ों के इ़लावा दिन रात सोए रहना ही अच्छा है ताकि उन के शर से लोग बचे रहें, अपने शर से लोगों को बचाना भी कारे सवाब है लेकिन इस में अच्छी निय्यत का होना ज़रूरी है, ऐसा नहीं कि ख़र दिमाग़ है और लोगों को अपने शर से मह़फ़ूज़ नहीं रख सकता तो अब सोया पड़ा रहे या नींद का इंजेक्शन लगवा ले। अल्लाह करे हम ऐसे शरीर न बनें कि हमारे शर से लोगों को तक्लीफ़ पहुंचे बल्कि हम नेक बन जाएं। नेक बनने के लिये दावते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ नेक भी बन जाएंगे।

गुनाहों से हर दम बचा या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा

करम हो करम या ख़ुदा या इलाही
इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025